सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन नं. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -53 | 23 अगस्त 2025,शनिवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

राजस्थान में सरकारी स्कूलों के 86 हजार कमरों में नहीं लगेंगी कक्षाएं

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजस्थान के सरकारी स्कूलों में मौजूद जर्जर कमरों में कक्षाएं लगाकर मासूम बच्चों की जान से खिलवाड़ करने पर हाई कोर्ट ने रोक लगा दी है। उच्च न्यायालय ने हाल ही में इस बारे में एक बहुत महत्वपूर्ण आदेश जारी किया और प्रदेश के सरकारी स्कूलों में बने 86,000 से ज्यादा जर्जर कमरों में कक्षाएं लगाने पर पूरी तरह से रोक लगा दी। साथ ही अदालत ने स्पष्ट रूप से यह निर्देश भी दिया कि इन कमरों को बंद कर दिया जाए और बच्चों को इनमें जाने भी नहीं दिया जाए। फैसला सुनाते हुए कोर्ट ने राज्य सरकार से उपयुक्त वैकल्पिक व्यवस्था करने को भी कहा ताकि प्रभावित छात्रों की पढ़ाई बाधित न हो। जस्टिस महेंद्र कुमार गोयल और अशोक कुमार जैन की पीठ ने जुलाई में झालावाड़ में एक स्कूल की छत गिरने की घटना के बाद हुए एक सरकारी सर्वे के बाद शुक्रवार को यह आदेश पारित किया। जुलाई में हुई इस

घटना में 7 छात्रों की मौत हो गई थी और 8 घायल हो गए थे। इस फैसले को सुनाने के बाद अदालत ने अब इंजीनियरों से तकनीकी वेरिफिकेशन रिपोर्ट मांगी है और मामले पर अगली सुनवाई के लिए 4 सितंबर की तारीख दी है। अदालत ने जिस सरकारी रिपोर्ट के आधार पर यह फैसला सुनाया, उसके अनुसार, राजस्थान में 63,018 सरकारी स्कूल हैं जिनमें 5,26,162 कमरों में कक्षाएं लगती हैं। इनमें से 86,934 पूरी तरह से जर्जर पाए गए। सर्वेक्षण में यह भी पता चला कि इन स्कूलों में से 5,667 के भवन उपयोग के लिए पूरी तरह से असुरक्षित थे। शौचालयों की बात करें तो 17,109 जर्जर पाए गए जबकि 29,093 मरम्मत योग्य थे। यह रिपोर्ट झालावाड़ स्कूल हादसे के बाद शिक्षकों द्वारा किए गए एक प्रारंभिक सर्वेक्षण का हिस्सा हैं। झालावाड़ में हुई घटना के बाद जैसलमेर में हुई एक अन्य घटना में, एक स्कूल का मुख्य द्वार गिरने से एक छात्र की मौत हो गई थी और दो अन्य घायल हो गए थे।

मंदिर के पट नहीं खुलवा पाया तो जूते-चप्पल नहीं पहनूंगा

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा के मांडल कस्बे में 48 साल से बंद एक धर्मस्थल को लेकर फिर बयानबाजी हो रही है। मांडल विधायक उदयलाल भड़ाना ने गुजरात के सूरत में गुरुवार (21 अगस्त) रात आयोजित कार्यक्रम में धार्मिक स्थल को लेकर बयान दिया। इसका वीडियो शुक्रवार को सामने आया। भड़ाना सूरत में समाज के एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा- मैं अपने प्रयास 100 प्रतिशत कर रहा हूं, भगवान जब चाहेंगे, तब मंदिर खुलेगा। मैं तो केवल निमित्त मात्र हूं, करने वाले भगवान देवनारायण खुद हैं, जिस दिन उनको लगेगा की, पट खोलना चाहिए, उस दिन पट खुलेंगे।

भीलवाड़ा जिला मुख्यालय से 14 किमी दूर मांडल कस्बे में गुर्जर समाज का एक धर्मस्थल है। इस पर दावे को लेकर दो पक्षों में पुराना विवाद है। इसके कारण पुलिस का पहरा है। करीब 48 साल पहले एक समाज के लोगों ने चबूतरे पर अपने धार्मिक कार्य की अनुमति मांगी थी। उन्हें समाज ने अनुमति दी तो उन्होंने परिसर पर कब्जा कर लिया और अपना धर्म स्थल होने का दावा किया।

1977 में मामला न्यायालय पहुंचा। तब न्यायालय ने दरवाजे पर ताला जड़ने के बाद चाबी मांडल थाने में जमा करा दी, जो अभी तक थाने में जमा है।

पिछले साल 2024 में भगवान देवनारायण की 1111वीं जयंती पर धर्मस्थल से 500 मीटर दूर धार्मिक आयोजन हुआ था। इसके बाद अब सोशल मीडिया पर कुछ वीडियो शेयर हुए। अपील की गई थी कि 4 फरवरी 2025 को युवा मांडल पहुंचें। युवा सोशल मीडिया के चक्कर में न आएं।

तेज़ाब की धमकी और फर्जी कागज़ों पर करवाए साइन, फिर जबरन 3 तलाक

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजधानी के अशोक नगर थाना क्षेत्र में रहने वाली एक महिला ने अपने पति और ससुराल वालों पर संगीन आरोप लगाए हैं। पीड़िता शहनाज बानो ने अदालत का दरवाज़ा खटखटाते हुए दावा किया कि उसके पति फैसल अहमद उर्फ सनी और परिजनों ने मिलकर षड्यंत्रपूर्वक फर्जी तलाकनामा तैयार किया, जबरन तीन तलाक दिया और दहेज व स्त्री धन हड़प लिया। अदालत के आदेश पर अशोक नगर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शहनाज बानो ने अदालत में दायर परिवाद में बताया कि उसका निकाह 30 जुलाई 2021 को फैसल अहमद से हुआ था। शादी के दौरान ससुराल पक्ष की मांग पर 22 तोला सोना, 500 ग्राम चांदी और 10 लाख रुपये नकद सहित भारी-भरकम दहेज दिया गया। आरोप है कि शादी के बाद भी पति और परिजन संतुष्ट नहीं हुए और लगातार अतिरिक्त संपत्ति व सामान की मांग करने लगे। जब परिवार की ओर से इनकार हुआ, तो शहनाज को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाने लगा।

पीड़िता ने यह भी आरोप लगाया कि फैसल अहमद पहले से ही एक अन्य युवती के साथ संबंध रखता था। शादी के बाद उसने शहनाज पर तलाक लेकर अलग होने का दबाव बनाया। लेकिन जब उसने इनकार किया, तो पति और ससुराल वालों ने मिलकर षड्यंत्र रच डाला।

शहनाज बानो का कहना है कि छह जुलाई 2025 को आरोपियों ने उसे कमरे में बंद कर तेज़ाब डालने की धमकी दी। जान से मारने के डर से उसे जबरन स्टांप पेपर पर हस्ताक्षर कराए गए। बाद में उन्हीं कागज़ों पर फर्जी तलाकनामा तैयार कर लिया गया। पीड़िता का आरोप है कि इस पूरी साजिश के पीछे उसका पति फैसल अहमद और परिवार के अन्य लोग शामिल थे।

महिला ने अदालत को बताया कि शादी के समय दिए गए सभी जेवरात और 10 लाख रुपये नकद भी ससुराल वालों ने हड़प लिए। बार-बार मांगने पर भी उन्हें वापस नहीं किया गया। उल्टा, धमकी और उत्पीड़न का सिलसिला जारी है पीड़िता की शिकायत पर अदालत ने मामला दर्ज करने का आदेश दिया। आदेश के बाद अशोक नगर थाना पुलिस ने फैसल अहमद, मोहम्मद अहमद, सोहेल अहमद, फरजाना अहमद, रिविश उर्फ पिंटू, चिंटू, सलमा और मेहरीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस ने आरोपियों पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं के साथ-साथ मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) अधिनियम के प्रावधानों में केस दर्ज किया है। अशोक नगर थाना पुलिस ने सभी आरोपियों को नोटिस भेजकर पूछताछ शुरू कर दी है। फिलहाल पुलिस का कहना है कि मामला बेहद गंभीर है और दस्तावेजों की जांच की जा रही है। यह भी परखा जाएगा कि तलाकनामा असली है या जाली। वहीं, पीड़िता ने न्यायालय से सुरक्षा की गुहार लगाई है ताकि ससुराल पक्ष की ओर से कोई और दबाव न बनाया जा सके।

25 कुत्तों को गोली मारने वाले का स्वागत, लड्डू बांटे

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

झुंझुनूं में हाथ में बंदूक लेकर दौड़ा-दौड़ा कर 25 कुत्तों को गोली मारने वाले व्यक्ति की जमानत हुई तो गांव में जश्न मनाया गया। ग्रामीणों ने डीजे बजाया, उसे माला पहनाई और पिकअप में बैठाकर पूरे गांव में रैली निकाली।

इस दौरान ग्रामीणों ने बस स्टैंड से गुजर रही बस को रुकवाया और उसमें बैठे यात्रियों को लड्डू बांटे। कुत्तों को गोली मारने वाले व्यक्ति को जब गांव में घुमाया गया तो वह हाथ जोड़कर उसके इस स्वागत सत्कार के लिए लोगों का अभिवादन करता रहा।

स्वागत सत्कार का वीडियो सामने आने के बाद पशु प्रेमियों ने सोशल मीडिया पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। लोगों ने इसे अपराध का महिमामंडन बताया। एक यूजर ने लिखा- आज कुत्तों का कातिल सेलिब्रिटी है, कल इंसानों का हत्यारा भी ऐसे ही सम्मानित होगा?, वहीं दूसरे ने लिखा- यह समाज के लिए खतरनाक मानसिकता है, अपराधियों को हीरो बनाना गलत संदेश देता है। झुंझुनूं और आसपास के इलाकों में काम कर रहे पशु प्रेमी संगठनों ने भी इस पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उनका कहना है- सरकार जहां पशु संरक्षण पर करोड़ों रुपए खर्च कर रही है, वहीं ग्रामीणों का यह रवैया बेहद निंदनीय है। पशु क्रूरता अधिनियम 1960 और आईपीसी की धारा 429 के तहत जानवरों की हत्या करना गंभीर अपराध है, जिसमें सजा और जुर्माने का प्रावधान है। बावजूद इसके आरोपी को सम्मानित करना कानून और न्याय दोनों का मजाक है।

C M Y K

सम्पादकीय

सुधारी गई एक ऐतिहासिक भूल

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले की प्राचीर से सिंधु जल संधि पर कहा कि 'भारत ने अब निर्णय ले लिया है कि खून और पानी एक साथ नहीं बहेंगे। लोगों को अहसास हो गया है कि सिंधु जल संधि अन्यायपूर्ण थी। सिंधु नदी प्रणाली के पानी से दुश्मन की जमीनों की सिंचाई होती रही, जबकि हमारे किसान कष्ट झेलते रहे।' उनका यह आक्रोश पहली बार नहीं था। वह इस मुद्दे पर कई मंचों से प्रखरता से बोलते रहे हैं। लोकसभा में आपरेशन सिंदूर पर चर्चा के दौरान

भी उन्होंने कहा था कि 'भारत के राष्ट्रीय हितों को तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा बार-बार गिरवी रखा गया। सिंधु और झेलम जैसी नदियां, जो कभी भारत की पहचान का पर्याय थीं, भारत की अपनी नदियां और जल होने के बावजूद मध्यस्थता के लिए विश्व बैंक को सौंप दी गईं। यह भारत के स्वाभिमान और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ एक विश्वासघात था।' पहलगाम आतंकी हमले के बाद सबसे पहले भारत सरकार ने सिंधु जल संधि को स्थगित करने का कठोर निर्णय लिया। सिंधु जल संधि को स्थगित करने का निर्णय वह साहसिक फैसला है, जो पहले कभी नहीं लिया गया। फिर चाहे 1965, 1971 का युद्ध हो या 1999 का कारगिल संघर्ष। इस साहसिक निर्णय ने आतंक के विरुद्ध भारत के सोच, कठोर कार्रवाई और रणनीति को दुनिया के समक्ष पूरी स्पष्टता से साबित किया है।

सिंधु जल संधि हमारी स्वतंत्रता के शुरुआती वर्षों में की गई ऐतिहासिक गलतियों और भूलों में से एक थी। इस पर 19 सितंबर, 1960 को कराची में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति अयूब खान द्वारा सद्भावना के प्रतीक के रूप में हस्ताक्षर किए गए। सिंधु जल संधि में सैद्धांतिक रूप से पाकिस्तान और भारत के बीच 80-20 के अनुपात में सिंधु जल प्रणाली के वितरण पर सहमति व्यक्त की गई।

इस प्रणाली से पाकिस्तान को एक बड़ा हिस्सा मिलने के अलावा संधि ने रावी, व्यास और सतलुज की तीन पूर्वी नदियों के पानी को भारत के उपयोग के लिए और सिंधु, झेलम और चेनाब की तीन पश्चिमी नदियों के पानी को पाकिस्तान के उपयोग के लिए अनुमति दी गई। इसके अलावा 10 साल की संक्रमण अवधि पर सहमति बनी और कहा गया कि इस दौरान पाकिस्तान पश्चिमी नदियों पर लिंक नहरों की एक प्रणाली का निर्माण करेगा और इसका भुगतान भारत द्वारा किया जाएगा। इसकी लागत 83 करोड़ रुपये आंकी गई थी, जो आज के हिसाब से करीब 8,000 करोड़ रुपये है। इसके अलावा विश्व बैंक की भागीदारी से पाकिस्तान को लगभग 400 करोड़ रुपये का अनुदान मिल रहा था। भारत को अपनी लिंक नहरों के निर्माण के लिए 100 करोड़ रुपये से अधिक की दरकार थी, लेकिन उसे केवल 30 करोड़ रुपये मिल रहे थे और वह भी ऋण के रूप में। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण था? उस समय भी इस संधि पर हस्ताक्षर के खिलाफ देश में व्यापक निराशा थी। 30 नवंबर, 1960 को संसद में सिंधु जल संधि पर चर्चा करते समय पाली, राजस्थान से कांग्रेस के सांसद हरीश चंद्र माथुर ने सिंधु जल संधि पर समाचार पत्र के संपादकीय का उल्लेख करते हुए कहा था, विवाद के लगभग हर मुख्य बिंदु पर भारत ने अक्सर अपने हितों की कीमत पर पाकिस्तान की इच्छाओं के आगे घुटने टेके हैं।

प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य

समाजसेवी ने महात्मा गांधी हॉस्पिटल व्यवस्थाओं में सुधार हेतु दिए महत्वपूर्ण सुझाव

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा । दिनांक-23 अगस्त 2025 महात्मा गांधी हॉस्पिटल, भीलवाड़ा की व्यवस्थाओं को और अधिक सुदृढ़ एवं मरीजों के अनुकूल बनाने के उद्देश्य से समाजसेवी एवं पूर्व आर.एम.आर.एस. सदस्य मोहम्मद हारून रंगरेज ने अधीक्षक डॉ. अरुण गॉड़ को एक पत्र प्रेषित कर कई अहम सुझाव दिए हैं।

उन्होंने पत्र में उल्लेख किया कि हॉस्पिटल की वर्तमान सेवाएँ पहले से ही उत्कृष्ट हैं, लेकिन बढ़ती मरीजों की संख्या और भीड़-भाड़ को ध्यान में रखते हुए कुछ सुधार आवश्यक हैं।

मुख्य सुझाव इस प्रकार हैं -

1 पर्ची व जांच शुल्क - पर्ची 10, एक्स-रे 50, सोनोग्राफी 300 व एम.आर.आई. 1000 में उपलब्ध करवाए जाने का सुझाव, ताकि अनावश्यक दुरुपयोग रोका जा सके। वहीं गरीब एवं असहाय मरीजों के लिए फ्री इलाज की व्यवस्था पूर्ववत जारी रखने की मांग की गई।

2 रक्त जांच रिपोर्ट का समय - रिपोर्ट शाम 4 बजे के बजाय दोपहर 12 से 1 बजे तक उपलब्ध करवाने का प्रस्ताव, जिससे मरीज उसी दिन उपचार प्राप्त कर सकें और उन्हें बार-बार आना न पड़े।

3 पार्किंग एवं ट्रैफिक व्यवस्था - हॉस्पिटल परिसर के बाहर पार्किंग अव्यवस्था दूर करने हेतु भोपाल क्लब व भोपाल छात्रावास परिसर का उपयोग करने की अनुशंसा की गई।

4 सड़क मरम्मत - आउटडोर एवं धर्मशाला के बाहर खराब सड़क की शीघ्र मरम्मत करवाने का आग्रह किया गया।

हारून रंगरेज ने पत्र में कहा कि आपके नेतृत्व में हॉस्पिटल में लगातार बेहतर कार्य हो रहे हैं और शीघ्र ही 205 बैड का नया हॉस्पिटल प्रारंभ होने वाला है। यदि इन बिंदुओं पर समय रहते ध्यान दिया जाए तो महात्मा गांधी हॉस्पिटल को और भी अनुशासित व मरीजों के लिए सुविधाजनक बनाया जा सकेगा। उन्होंने अधीक्षक से निवेदन

किया कि इन सुझावों को सहानुभूतिपूर्वक विचार कर आवश्यक कार्यवाही हेतु चिकित्सा मंत्री महोदय तक पहुँचाया जाए। जनहित से जुड़े इस पहल की शहर में सराहना की जा रही है और उम्मीद की जा रही है कि शीघ्र ही इन सुझावों पर सकारात्मक निर्णय होगा।

आबकारी विभाग भीलवाड़ा ने अभियान के दौरान अवैध शराब माफिया व ओवररेट वाली दुकानों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा । आबकारी आयुक्त राजस्थान उदयपुर के निर्देशानुसार भीलवाडा जिले में दिनांक 01.08.2025 से 21.08.2025 तक चलाये गये विशेष अभियान का सफल आयोजन किया गया।

जिला आबकारी अधिकारी गौरव मणि जौहरी ने बताया कि 21 दिन चले अभियान में आबकारी वृत्त (टीम आसीन्द, भीलवाड़ा, गंगापुर, माण्डलगढ़, शाहपुरा) जिला भीलवाड़ा में 04 महत्वपूर्ण, 21 साधारण, 10 एम.आर.पी., 01 टाइमिंग, 15 अन्य (बी.एल.सी.) सहित 51 अभियोग दर्ज किये गये। इन अभियोगों में 496 पव्वे देशी शराब, 56 बीयर बोतल, 28 बीयर केन एवं 180 लीटर हथकढ़ शराब बरामद करते हुए 50 लीटर उत्तेजित वॉश नष्ट की गई। अभियान के दौरान 13 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया।

इसी प्रकार आबकारी थाना (भीलवाडा, शाहपुरा, गुलाबपुरा, माण्डलगढ़) जिला भीलवाड़ा में

08 महत्वपूर्ण, 21 साधारण सहित कुल 29 अभियोग दर्ज किये गये। इन अभियोगों में 1009 पव्वे देशी शराब, 10 पव्वे अंग्रेजी शराब, 14 बीयर बोतल एवं 215 लीटर हथकढ़ शराब व 06 बोतल वॉश बरामद करते हुए 7550 लीटर उत्तेजित वॉश एवं 17. भट्टियां नष्ट की गई। अभियान के दौरान 17 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। अभियान के दौरान सुलगती भट्टी के 04 अति महत्वपूर्ण अभियोग शाहपुरा, गुलाबपुरा एवं माण्डलगढ़ थाने में दर्ज किये गये। चालू भट्टी के उपकरणों को जप्त कर कब्जे राज लिया गया। जिले में 80 मुकदमें दर्ज होकर विशेष अभियान का आयोजन सन्तोषजनक रहा। अवैध मदिरा के विरुद्ध आगे भी प्रभावी निरोधात्मक कार्यवाही की जावेगी।

69 वी जिला स्तरीय 17 वर्षीय छात्र बॉलीबॉल प्रतियोगिता 30 से आकोला में

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

आकोला (रमेश चंद्र डाड)

69 वी जिला स्तरीय छात्र बॉलीबॉल प्रतियोगिता 17 वर्षीय आगामी 30 अगस्त से आकोला कस्बे में आयोजित की जाएगी।इस प्रतियोगिता को सफल बनाने के लिए ग्रामीण तैयारियों में जुट गए हैं। आकोला राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की प्रिंसिपल मनीषा पारीक ने बताया कि प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए विद्यालय में ग्रामवासियों ओर विद्यालय स्टाफ, ग्राम पंचायत प्रशासक की एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए सभी के सुझाव लिए गए ओर विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया ओर जिम्मेदारी दी गई। इस दौरान प्रशासक शिव लाल

जाट,समाजसेवी जमना लाल जोशी, गंगाधर व्यास, कुंजबिहारी पाराशर, कृष्णगोपाल आचार्य, सत्यनारायण काबरा, भैरू लाल जाट, प्रियदर्शी पारीक , पूर्व सरपंच हेमलता उपाध्याय, चांद मल डाड, जगदीश बांगड़, विकास पाराशर, बबलू भाट सहित कई अन्य लोग उपस्थित थे।

जिला कलेक्टर ने ली जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा। जिला कलेक्टर श्री जसमीत सिंह संधू ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं, जनकल्याणकारी कार्यक्रमों तथा बीस सूत्री कार्यक्रम की समीक्षा बैठक ली। उन्होंने विभागवार प्रगति की जानकारी ली।

बैठक में जिला कलेक्टर ने खाद्य विभाग को नवीन परिवारों को एनएफएसए से शीघ्र लाभान्वित कर जिले की रैंकिंग सुधारने के निर्देश दिए। ऊर्जा विभाग को कुसुम योजना एवं संशोधित वितरण क्षेत्र योजना में प्रगति लाने पर जोर दिया। उन्होंने कृषि विभाग को प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। महिला अधिकारिता विभाग की लाडो प्रोत्साहन योजना और चिकित्सा विभाग की आयुष्मान आरोग्य योजना की बारीकी से समीक्षा करते हुए उन्होंने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को योजना अंतर्गत प्रगतिरत कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए।

स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) की समीक्षा करते हुए जिला कलेक्टर ने घर-घर कचरा संग्रहण व्यवस्था को और मजबूत करने एवं पिंक टॉयलेट के निर्माण कार्य सितंबर माह तक पूरा करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार उन्होंने उद्योग विभाग की पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएचईडी विभाग की जल जीवन मिशन तथा ग्रामीण विकास विभाग की पं. दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्ति योजना, स्वामित्व योजना एवं स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) की प्रगति पर भी विस्तृत समीक्षा की। श्री संधू ने सभी विभागों को निर्देश दिए कि बीस सूत्रीय कार्यक्रमों की प्रगति में सुधार लाकर जिले को राज्य स्तर पर बेहतर स्थान दिलाना प्राथमिकता होनी चाहिए। बैठक में जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री चंद्रभान सिंह भाटी सहित समस्त विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी गण मौजूद रहे।

विश्व वरिष्ठ जन दिवस पर वरिष्ठ जनों का किया सम्मान

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

विश्व वरिष्ठ जन दिवस पर स्वतंत्र लेखक व वरिष्ठ साहित्यकार तथा प्रशासनिक अधिकारी मदन सालवी ओजस्वी ने माला पहनाकर वरिष्ठ जन दिलिप गुजर तथा ओम प्रकाश परिहार आदि का सम्मान करते हूऐ बताया कि जिस घर के बेटे बहू अपने अपन मांता पिता को वृद्धाश्रम मे छोड देते हे वह सपूत नही कपूत होते है। हमें अपने माता पिता खुशहाल रखने से हम खुशहाल रह सकते है।

नंदराय की गुणानुवाद सभा में उमड़े सर्वसमाज के प्रमुख

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

आकोला (रमेश चंद्र डाड) राष्ट्रीय श्रमण संघ की दक्षिण सिंहणी महासाध्वी डॉक्टर दर्शन प्रभा जी महाराज के बेंगलुरु में 18 अगस्त को हुए देवलोक गमन को लेकर जैन समाज गमगीन है, बेंगलुरु सहित देश के सैकड़ों स्थानों पर विशेषत- श्रमणसंघीय चातुर्मास स्थलों में पुष्कर गुरु परंपरा के क्षेत्र में चतुर्विध संघ द्वारा गहरी वेदनाएं व्यक्त की जा रही है। उसी श्रृंखला में भीलवाड़ा जिले के मांडलगढ़ उपखंड के बीगोद के समीप नन्दराय कस्बे में सुप्रतिष्ठित दिनेशकुमार चंद्र प्रकाश सूर्य प्रकाश संचेती परिवार की ओर से श्रद्धांजलि स्वरुप महामंत्र जाप व गुणानुवाद सभा का जैन स्थानक भवन में आयोजन किया, जिसमें नन्दराय सहित क्षेत्र के श्रद्धालु व समाज जन उमड़ पड़े।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ नंदराय के तत्वावधान में हुए इस कार्यक्रम में सर्व समाज की उपस्थिति गजब के धर्म स्नेह की प्रतीक रही। इस अवसर पर लोकमान्य संत प्रवर्तक गुरुदेव रूपचंद जी महाराज रजत की सातवीं एवं नंदराय की बेटी एवं संचेती परिवार की मातृस्वरूपा बहन श्रीमती कमला जैन की तीसरी पुण्यतिथि पर उन्हें भी श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

मुख्य वक्ता के रूप में समारोह को संबोधित करते हुए बीगोद में निवासरत नंदराय के ही लाल समाज गौरव दिनेश संचेती दिनकर ने कहा कि डॉक्टर दर्शन प्रभाजी महाराज का समूचा जीवन एक

खुली पुस्तक की तरह था, उनकी नेकियों व खूबियों के विषय में सुनकर हर कोई दांतों तले उंगली दबाने लगा। संचेती ने बताया कि 71 वर्षीय महासाध्वी ने संयम के क्षेत्र में 51 वर्ष पूर्ण किए तथा उग्र तप व स्वाध्याय करते हुए जैनागमों का गहन अध्ययन किया। शोध ग्रंथ के निर्माण सहित कई ज्ञानवर्धक लेख लिखे। 51 में से 45 वर्षों तक एक समय आहार कर ज्ञानेंद्रियों पर विजय प्राप्त की। उनकी निर्भीकता, स्पष्टता, दमंगता व उज्जवलता जैसे अनेकानेक गुणों से हर कोई कायल रहा। दक्षिण में जाकर दक्षिण सिंहणी उपमा से अलंकृत हुए । उनका निधन जिनशासन की अपूर्णीय क्षति रहा । ऐसी भव्य आत्मा भले ही ओझल हो गई पर भक्त के हृदयों से कभी ओझल नहीं होगी।

अखिल भारतवर्षीय जैन दिवाकर विचार मंच रजिस्टर्ड नई दिल्ली की राष्ट्रीय मंत्री मेवाड़ मणी श्राविकारत्न मधु संचेती ने बताया कि मैंने उनके जीवन को बहुत निकटता से देखा। अमृतसर, पंजाब, मुंबई धारावी (महाराष्ट्र),समदड़ी, उदयपुर कुंवारिया सहित धरती के कोने-कोने में पहुंचकर उनसे बहुत सीखा, बहुत पाया, उनके जीवन के गुणों को हृदयंगम किया, मैंने, उनकी कथनी करनी की एकता, साधुत्व की सच्ची साधना सहित कई अमूल्य गुणों के दर्शन किए। ऐसी होनहार महासाध्वी का देवलोक गमन समाज को गहरी पीड़ा दे गया। जैन संघ के मंत्री राजेंद्र सिसोदिया ने डॉक्टर दर्शन प्रभा जी महाराज एवं स्वर्गीय सेठ केसरसिंह प्रेम देवी संचेती की सुपुत्री श्रीमती कमला जैन के व्यक्तित्व कृतित्व पर प्रकाश डालने के बाद कहा कि नंदराय की भूमि पर जन्म लेकर दिनेश संचेती दिनकर ने देश के सर्वोच्च शिखर तक नन्दराय का नाम गौरवान्वित किया है जो हमें गौरवान्वित करता है। डॉक्टर दर्शन प्रभा जी महाराज का जीवन वृत यहां सुनना भी उन्हीं की देन है। उन्होंने बड़ी संख्या में उपस्थित जन समुदाय का संघ की ओर से अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में स्वाध्याय बहन मंजुला भंसाली आवरी माता (चित्तौड़गढ़) निर्मला चौधरी, संगीता खमेसरा चित्तौड़गढ़, अतिरिक्त विकास अधिकारी सत्यनारायण गुजराती डांणियों की कोटड़ी आदि ने भी अपना संबोधन दिया। इस अवसर पर गुरुणी यश कंवर जी महाराज के व्यक्तित्व कृतित्व पर भी प्रकाश डाला गया तथा अंजना चौधरी ,लीला चोरड़िया, किरण सिसोदिया, निर्मला चौधरी, संगीता चौधरी, सोनिका सिसोदिया, देवेंद्र चौधरी ने तपस्या की भेंट प्रदान की जिसकी अनुमोदन स्वरूप स्वर लहरिया गूंज उठी। यशकंवर जी महाराज एवं डॉ दर्शन प्रभा जी महाराज के गगनभेदी जयनाद हुए।

कार्यक्रम में समाजसेवी शांतिलाल बाबेल, सुशील चौधरी भीलवाड़ा , देवेंद्र चौधरी, भाविक बाबेल, सेवानिवृत्ति सचिव छोटू दास वैष्णव, समाजसेवी राजकुमार वर्मा, भेरूलाल स्वर्णकार, सेवानिवृत्त पशु चिकित्सक बंशीलाल प्रजापत शिक्षा विभाग के चंद्रशेखर प्रजापत , पत्रकार दिनेश प्रजापत , पूर्व प्रधानाचार्य शोभा लाल लक्षकार, बंसीलाल दिनेश कुमार वीरवाल, स्कूल संचालक बरदीचंद धोबी, प्रेम राज वर्मा सुनील गर्ग न्यायिककर्मी श्रवण कुमार, सांवरलाल चांदमल स्वर्णकार सहित बड़ी संख्या में पुरुष व महिला मंडल की श्राविकाए उपस्थित थी। युवा व बाल वर्ग की भी काफी अच्छी उपस्थिति रही ।

गुणानुवाद के बाद पुजारी राजकुमार महावीर बालमुकुंद पाराशर के नेतृत्व में संचेती परिवार ने पर्युषण पर्व संबंधी पूजा(ठेल)की, जिसमें सभी ने भाग लिया । संचेती परिवार ने आभार व्यक्त करते हुए प्रसाद व प्रभावना के कवर वितरित किए।

चारधाम यात्रा से लौटे क्षेत्रवासियों और परिजनों ने किया स्वागत

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

आकोला(रमेश चंद्र डांड)कस्बे गेणोली गांव से 15 दिवसीय चारधाम यात्रा दर्शन के लिए बस द्वारा लौटेने पर सभी श्रद्धालु यात्रा पूर्ण कर सकुशल पहुंचे यात्रा के दौरान घिसू मीणा , भूरा माली, भुरा भील का स्वागत किया क्षेत्रवासियों और परिजनों ने डीजे पर बंनदोरी का कार्यक्रम शुरू किया जो बजार से शुरू होकर भगवान चारभुजा नाथ मंदिर परिसर पहुंचेगी एवं देव नारायण भगवान के दर्शन किया फूलमालाओं से स्वागत किया कार्यक्रम में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी मौजूद रहे

पिवनिया तालाब की चादर चली

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

शाहपुरा राजेन्द्र खटीक।

शाहपुरा-शाहपुरा में दो दिन से लगातार बरसात होने से माणा घाट शिव मन्दिर के पीछे सुबह से चादर चलना शुरू हो गई।जिससे कारण बारहठ स्मारक के पास श्री राम टाकीज के सामने सब्जी मंडी भी नही लग सकी और अंतरराष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के बाहर की सारी दुकानों में पानी भर गया।उधर रावला घाट पर भी चादर चलने पर मोहल्ले वासी नहाते नजर आए।

शाहपुरा में आधे घण्टे की बारिश में भी शाहपुरा के बाजार में पानी आ जाता है जिससे कारण दुकानदारो की दिन भर की ग्राहकी खत्म हो जाती है।आज भी बहुत सी दुकाने बाजार में पानी आ जाने से बन्द थी।

खाखुलदेव मंदिर के पुजारी के परिवार के साथ मारपीट को लेकर विभिन्न मानवाधिकारों संगठनों के पदाधिकारियों ने बराणा ग्राम का किया दौरा।

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

रामसुख मेघवंशी आमेसर

खाखुलदेव मंदिर के पुजारी के साथ मारपीट प्रकरण को लेकर दलित संगठनों के पदाधिकारियों ने विभिन्न पदाधिकारियों के बातचीत करके बराणा ग्राम का दौरा किया।

वही दलित और मानव अधिकार संगठनों की एक उच्च स्तरीय टीम ने आज आसीन्द क्षेत्र के बराना गाँव का दौरा किया और पीड़ित पक्ष और प्रशासनिक अधिकारियों से मुलाक़ात की.यह टीम डीजीपी तथा मुख्य सचिव तथा मानव अधिकार आयोग तथा राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग को अपनी रिपोर्ट देंगे.

टीम में दलित आदिवासी एवं घुमंतू अधिकार अभियान के प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट तारा चंद वर्मा , पीयूसीएल के भीलवाड़ा जिला अध्यक्ष राकेश शर्मा , पीयूसीएल कार्यकारिणी सदस्य एडवोकेट ममता मेघवंशी , पीयूसीएल के जिला

सचिव जयपुर के डॉ. नवीन नारायण , दलित सिविल सोसायटी राजस्थान के एडवोकेट कृष्ण कुमार , डॉ अंबेडकर वेलफेयर सोसाइटी भीलवाड़ा अध्यक्ष सोहन लाल भोजपुरिया , एडवोकेट दौलतराज नगोडा, पीयूसीएल भीलवाड़ा सदस्य एडवोकेट ललिता मेघवंशी सहित कई लोग मौजूद रहे।

दलित और मानव अधिकार संगठन की उच्च स्तरीय टीम ने कहा कि यहां पर दलित पुजारी के साथ मारपीट की घटना होने के बावजूद अभी तक आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई है ।

आवश्यकता
द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया को
को राजस्थान के प्रत्येक जिले व तहसील से ब्यूरो व संवाददाताओं की आवश्यकता है
इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें
- 9694957624 dayaramdivya5@gmail.com
themovementofindia2012@gmail.com

सरसों की फसल में लगने वाले मुख्य कीट एवं उनका नियंत्रण

देश में रबी फसलों में सरसों की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है, सोयाबीन, मूंगफली के बाद सरसों की खेती देश भर में सबसे ज्यादा होती है। खाद्य तेल के रूप में सरसों की मांग अधिक रहने के कारण पिछले कुछ वर्षों से किसानों को सरसों की खेती से अच्छा मुनाफा हो रहा है। सरसों का अच्छा उत्पादन कई कारणों पर निर्भर करता है जैसे मिट्टी, जलवायु, बीज, रोग तथा कीट। कीट एवं रोगों का प्रभाव सीधे सरसों के उत्पादन पर होता है इसलिए किसानों को समय पर इनकी पहचान कर उन पर नियंत्रण पाना आवश्यक है।

सरसों की फसल में समय-समय पर विभिन्न कीट एवं रोग काफी नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे उपज में कमी आती है। यदि समय रहते इन रोगों एवं कीटों का नियंत्रण कर लिया जाए तो सरसों के उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। चेंपा या माहू, आरामक्खी, चितकबरा कीट, मटर का पर्ण सुरंगक कीट आदि सरसों के मुख्य कीट हैं।

सरसों का माहूं (चैपा /मोयला /एफिडा) कीट

सरसों का माहू छोटा, लंबा व कोमल शरीर वाला कीट है। प्रौढ़ माहूं दो अवस्थाओं में पाया जाता है-पहला पंखरहित और दूसरा पंखसहित। पंखरहित प्रौढ़ 2 मि.मी. लंबे, गोलाकार व हरे रंग के या हल्के हरे पीले रंग के होते है। पंखसहित प्रौढ़ पीले उदर वाले व पंख पारदर्शी होते हैं। शिशु पंखरहित अवस्था के समान होते हैं, परन्तु आकार में छोटे होते हैं। दो नलीनुमा संरचनाएं (कोर्निक्ल्स) उदर के अंतिम भाग में उपस्थित होती है।

हानि के लक्षण

ये कीट प्राय-दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में प्रकट होते हैं और मार्च के अंत तक सक्रिय रहते हैं और मार्च के अंत तक विभिन्न भागों जैसे - पुष्पक्रम, पत्ती, तना, टहनी व फलियों से रस चूसकर नुक्सान पहुंचाते हैं। ये कीट समूहों में रहते हैं व तीव्रता से वंशवृद्धि करते हैं। माहूं पहले फसल की वानस्पतिक कलिका पर प्रकट होते हैं व धीरे-धीरे पुरे पौधे को ढक लेते हैं। ये कीट मधुस्राव निकालते हैं और पौधों पर काले कवक का आक्रमण हो जाता है। तना व पत्तियाँ काली हो जाती हैं, जिससे प्रकाश संश्लेषण में बाधा आती है। इस प्रकाश यह कीट उपज व तेल की मात्रा में कमी करता है। बादालयुक्त व ठंडा मौसम वंशवृद्धि के लिए अत्यंत उपयुक्त होता है।

समन्वित कीट प्रबंधन

जहाँ तक संभव हो सरसों की बुआई 15 अक्टूबर तक कर देनी चाहिए, इससे फसल माहूँ के प्रकोप से बच जाती है। उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का ही प्रयोग करना चाहिए।

माहूँ के प्राथमिक आक्रमण पर 10 दिनों के अन्तराल पर 2-3 बार माहूँ ग्रसित टहनियों को तोड़कर नष्ट कर देने से माहूँ की वंशवृद्धि को कम किया जा सकता है।

फसल में कम से कम 10 प्रतिशत पौधे माहूँ से ग्रसित हों तथा प्रत्येक पौधे पर 26 से 28 माहूँ हों, तभी छिड़काव करना चाहिए।

ऑक्सी-डेमेटान मिथाइल (मेटासिस्टाक्स) 25 पायस सांद्रण अथवा डाइमिथोएट (रोगोर) 30 पायस सांद्रण अथवा मैलाथियान 50 पायस सांद्रण की एक लीटर मात्र को 600-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें

अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1708 एस.एल. को 5 मि.ली. / 15 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। यदि दोबारा से कीट का प्रकोप हो तब 15 दिनों के अन्तराल से पुनः छिड़काव करें।

यह भी पढ़ें कृषि शक्ति योजना-मध्यप्रदेश

सरसों की आरा मक्खी

इस कीट की प्रौढ़ मक्खी 8-11 मि.मी. लंबी, पीले-नारंगी रंग की ततैया की तरह होती है। इसके पंख धूसर रंग के व काली शिरायें लिए हुए होते हैं। इसका अंडरोपक दांतेदार व आरिनुमा होता है इसलिए इसे आरा मक्खी कहते हैं। सर व टाँगे काली होती है। इसकी सुंडी गहरे हरे रंग की होती है, जिसकी पीठ पर पांच लंबवत धारियां होती है।

हानि के लक्षण

यह कीट मुख्य रूप से फसल की पौधावस्था (अक्टूबर-नवंबर) में ही नुक्सान पहुंचाता है। सूंडी, पत्तियों को काटकर उनमें अनियमित आकार के छेद कर देती हैं। अधिक प्रकोप की अवस्था में पौधे को कंकालित कर देती हैं। फसल में आक्रमण पौधावस्था में अधिक होता है और 3-4 सप्ताह पुरानी फसल में ज्यादा नुक्सान होता है। मध्य जलवायु और कम आर्द्रता इसकी वंशवृद्धि के लिए अनुकूल है।

समन्वित कीट प्रबंधन

स्वच्छ कृषि क्रियाएं (खरपतवार नियंत्रण, वैकल्पिक पोषक पौधे व फसल अवशेषों आदि को नष्ट करना) अपनाना चाहिए।

गर्मियों के दिनों (मई-जून) में खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करनी चाहिए।

फसल लगभग एक माह की हो जाए तब सिंचाई करनी चाहिए। इससे इस कीट की सूंडी पानी में डूबकर मर जाती है।

इस कीट के प्रकोप की अवस्था में मैलाथियान 50 पायस सांद्रण की एक लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करना चाहिए।

मटर का पर्ण सुरंगक कीट

प्रौढ़ मक्खी छोटी काले रंग की होती है और इसका सिर पिला होता है। प्रौढ़ मक्खी की लंबाई 1.5 मि.मी., पंख विन्यास लगभग 4 मि.मी. व घरेलू मक्खी के समान परन्तु आकार में छोटी होती है। नए मेगेट्स कीट धूसर सफेद रंग के होते हैं और इनके मुखांग काले भूरे रंग के होते हैं। पूर्ण विकसित कीट हरा पीला रंग का लगभग 3 मि.मी. चौड़ा, जिनका मध्य भाग मोटा और आगे से चपटा होता है। कीट पत्ती में सुरंग के अंदर रहता है और सुरंग में ही कृमिकोष में चला जाता है।

हानि के लक्षण

पौधे की पत्तियों में प्रौढ़ मादा के अन्डरोपक से अंडे देने के लिए छोटे-छोटे छेद करती है। प्रौढ़ मादा व नर इन छेदों से निकलने वाले रस को चूसते हैं। ये कीट पत्ती के पैरेनकाइमा ऊतकों को खाकर टेढ़ी-मेढ़ी सुरंग बनाते हैं। अत्यधिक ग्रसित पत्तियां पीली होकर गिर जाती है व उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। अधिक प्रकोप की दशा में ग्रसित पत्तियां छितर जाती हैं। पौधों का ओज प्रभावित होता है और पुष्पं एवं फलन गतिविधियाँ प्रभावित होती है। इस कीट का प्रकोप प्राय-पुरानी पत्तियों पर अधिक होता है।

समन्वित कीट

ग्रसित पत्तियों को तोड़कर जमीन में दबा देना चाहिए, ताकि पत्तियों में छिपे कीट व कृमिकोष नष्ट हो जाएं।

आँक्सी-डेमेटोन मिथाइल 25 पायस सांद्रण या डाइमिथोएट 30 पायस सांद्रण की एक लीटर मात्रा को 600-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करें अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1708 एस.एल. को 5 मि.ली. / 15 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।

चितकबरा कीट

प्रौढ़ कीट के शरीर के ऊपर काले व चमकीले नारंगी रंग के धब्बे होते हैं। प्रौढ़ 6.5-7.0 मि.मी. चौड़ा व पूर्ण विकसित शिशु 4 मि.मी. लंबा व 2.6 मि.मी. चौड़ा होता है। इन पर भूरी धारियां पाई जाती हैं। पहली व दूसरी अवस्था शिशु कीट का रंग चमकीला नारंगी और तीसरी व चौथी अवस्था का रंग लाल होता है। मुखांग चुभाने-चूसने वाले एवं पश्चोंमुखी होते हैं।

हानि के लक्षण

ये कीट फसल के छोटे-छोटे पौधों को या पौध अवस्था में अधिक नुक्सान पहुंचाते है। शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही पौधे की पत्तियों एवं प्ररोह से रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं। फसल की दो पत्ती अवस्था में नुक्सान होने पर ग्रसित उपरी भाग मुरझाकर सुख जाता है। वानस्पतिक अवस्था में प्रकोप के समय पत्तियों पर सफेद धब्बे हो जाते हैं। पौधे का विगलन हो जाता है व पौधे पूर्णत- सुख जाते हैं। दोनों मामलों में फसल की दोबारा बुआई आवश्यक हो जाती है। यह कीट फली बनने व पकने की अवस्था में भी आक्रमण करता है, जिससे फलियाँ व दाने सिकुड़ जाते हैं। खलिहानों में कटी हुई फसल पर इन कीटों का आक्रमण व हानि को देखा जा सकता है। इस प्रकार यह कीट उपज व तेल की मात्रा में कमी करता है। मध्यम तापमान 20 से 40 डिग्री सेल्सियस व कम आर्द्रता इस कीट के गुणन के लिए उपयुक्त है।

समन्वित कीट प्रबंधन

खेत में साफ़-सफाई रखनी चाहिए। खेतों के आसपास खरपतवार तथा फसल अवशेषों को नष्ट कर देना चाहिए।

खेतों की गर्मियों के दिनों (मई-जून) में मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करनी चाहिए।

बुआई के 3-4 सप्ताह बाद यदि संभव हो, तो पहली सिंचाई कर देनी चाहिए।

पौधावस्था में इस कीट का आक्रमण होने पर क्यूनालफाँस 10 प्रतिशत अथवा मैलाथियान 5 प्रतिशत धुल की 20-25 किलोग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें।

अत्यधिक प्रकोप की अवस्था में मेलाथियान 50 पायस अथवा डाइमिथोएट (रोगोर) 30 पायस सांद्रण की एक लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1708 एस.एल. की 150 मि.ली.मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करें।

फसल का रंग सुनहरा होने पर ही कटाई कर लेनी चाहिए। फसल की जल्द से जल्द मड़ाई कर लेनी चाहिए, जिसमें अधिक हानि न हो व पादप अवशेषों को तुरंत नष्ट कर देना चाहिए।

अधिक लाभ के लिए करें बेबीकॉर्न की खेती

कृषि क्षेत्र में किसान नई फसलों एवं नई किस्मों की वैज्ञानिक तरीके से खेती कर अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। कृषि के क्षेत्र में फसलों का चयन बाजार मांग के आनुसार करना चाहिए, जिससे किसानों को उचित भाव मिल सकें। आज के समय में लोगों के बीच स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के साथ बेबीकॉर्न की खपत में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस वजह से इस फसल का बाजार मूल्य भी अधिक है एवं इससे बहुत से उत्पाद बनाए जाते हैं।

बेबीकॉर्न मक्का की ही एक प्रजाति है, लेकिन इसकी उपयोगिता के आधार पर बेबीकार्न नाम दिया गया है। बाजार में मांग के अनुसार किसानों के बीच खेती की प्रतिस्पर्धा बनी हुई है। पौधे का अनिषेचित भुट्टा होता और रेशमी बाल (सिल्क) निकलने के 2-3 दिनों के अंदर तोड़कर उपयोग में लाया जाता है। यह काफी मुलायम होता है। समय बढने के साथ इसकी गुणवत्ता में गिरावट आती जाती है।

बेबीकॉर्न से होने वाले लाभ

यह एक स्वादिष्ट व पौष्टिक आहार है, पत्तियों में लिपटा होने के कारण यह कीटनाशक दवाइयों के प्रभाव से मुक्त होता है। इस कारण यह स्वास्थ्य की द्रष्टि से एकदम सुरक्षित है। बेबीकॉर्न का उपयोग सलाद, सूप, सब्जी, अचार एवं कैंडी, पकौड़ा, कोफ्ता, टिक्की, बर्फी, लड्डू, हलवा, खीर इत्यादि के रूप में होता है। बेबीकॉर्न में फास्फोरस भरपूर मात्रा उपलब्ध होता है। इसके लिए अतिरिक्त इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, कैल्सियम, लौह व विटामिन भी उपलब्ध हैं। कोलेस्ट्रोल रहित होने एवं रेशों की अधिकता के कारण यह एक निम्न कैलोरीयुक्त आहार है। यह हृदय रोगियों के लिए काफी लाभदायक है।

मृदा का चयन एवं खेती की तैयारी

बेबीकॉर्न की खेती के लिए पर्याप्त जीवांशयुक्त दोमट मृदा अच्छी होती है। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा शेष जुताई देसी हल/रोटावेटर या कल्टीवेटर द्वारा करके पाटा लगाकर खेत को तैयारी कर लेना चाहिए। बुआई के समय खेत में पर्याप्त नमी के साथ-साथ खेत पलेवा करके तैयार करना चाहिए।

बुवाई समय एवं विधि

उत्तर भारत में बेबीकार्न फरवरी से नवंबर के मध्य कभी भी बोया जा सकता है। बुवाई मेड़ों के दक्षिणी भाग में करनी चाहिए तथा मेड़ से मेड़ एवं पौधे से पौधे की दुरी 60 से.मी. म 15 से.मी. रखनी चाहिए। विभिन्न किस्मों के बीजों के आकार के अनुसार प्रति हैक्टेयर 22-25 किलोग्राम बीज दर उपयुक्त होती है।

उर्वरक प्रबंधन

अच्छी उपज के लिए उर्वरक का सही उपयोग होना चाहिए। फास्फोरस, पोटाश, जिंक सल्फेट एवं 1/3 भाग नाईट्रोजन, बुआई के समय एवं 1/3 भाग बुआई के 25 दिनों बाद तथा शेष 1/3 भाग नाईट्रोजन 40 दिनों बाद डालना चाहिए। फाँस्फोरस, पोटाश, जिंक सल्फेट एवं द भाग नाईट्रोजन बुआई के समय, द भाग नाईट्रोजन बुआई के 25 दिनों के बाद द भाग 60-80 दिनों के उपरांत तथा शेष नाईट्रोजन 80-110 दिनों के बाद देनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

पहली निराई-गुडाई बुआई के 15-20 दिनों बाद तथा दूसरी 30 से 35 दिनों बाद अवश्य करनी चाहिए। इससे जड़ों में हवा का संचार होता है और ये दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र करके पौधों को देती हैं। सीमाजीन 105 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर को 500-600 लीटर पानी में घोलकर बीज के अंकुरण के पूर्व खेत में छिडकाव करने से खरपतवार नहीं जमते और फसल तेजी से बढती है।

बेबीकॉर्न की तुड़ाई का सही समय

मक्के की बेबीकार्न की गुल्ली को 3-4 से.मी. सिल्क (जीरा) आने पर तोड़ लेना चाहिए। गुल्ली तुडाई के समय ऊपर की पत्तियों को नहीं हटाना चाहिए। पत्तियों को हटाने से ये जल्दी खराब हो जाती है। रबी में एक दो दिन छोड़कर गुल्ली की तुडाई करनी चाहिए। एकल क्रांस संकर मक्का में 3- 4 तुड़ाई जरुरी है।

कितनी उपज प्राप्त होगी

इस तरह खेती करने से बेबीकॉर्न की छिलकारहित उपज 15-20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर प्राप्त होती है। इसके अलावा 200-250 क्विंटल प्रति हैक्टेयर हरा चारा भी मिल जाता है। बेबीकार्न का छिलका तुडाई के दिन उतारकर प्लास्टिक की टोकरी, थैली या कंटेनर में रखकर तुरंत मंडी में पहुंचा देना चाहिए।

बेबी कॉर्न के साथ लगाएं अंतःफसल

रबी में बेबीकॉर्न के साथ आलू, मटर, राजमा, मेथी, धनिया, गोभी, शलजम, मूली, गाजर इत्यादि अंतःफसल के रूप में ली जाती है। अंतःफसल से जो उपज प्राप्त होती है वह अतिरिक्त लाभ होता है।

स्ट्राबेरी

स्ट्राबेरी एक स्वादिष्ट, लुभाने वाला तथा पौष्टिक फल है। इसमें विटामिन सी तथा लोहा बहुतायत में होते हें।

साधारणत: हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा महाराष्ट्र में पैदा किया जाता है।

किस्में : चान्डलर, गुरिल्ला, टियोगा, सीस्कैप, स्वीटचार्ली, डाना, टोरे, सेल्वा, बेलरूपी, फर्न, पजारो इत्यादि।

नर्सरी तैयार करना - स्ट्राबेरी का प्रवर्धन मुख्य रनर (लता को पकड़ने वाली नोक) द्वारा किया जाता है जाकि कायिक प्रवर्धन का एक भाग है। एक पौधे से 7-10 रनर प्राप्त होते हैं। बड़े स्तर पर प्रवर्धन के लिए सूक्ष्म प्रवर्धन (ऊतक प्रवर्धन) का प्रयोग करते हैं। इस विधि से पूरे वर्ष पौधे प्राप्त करते हैं।

सस्य क्रियाएँ - भूमि को तैयार करना स्ट्रबेरी की खेती के लिए जरूरी होता है। भूमि को जोतकर सममतल बनाते हैं। रनर का रोपक समय सितम्बर-अक्टूबर है। रोपक करते समय यह ध्यान रहे कि रनर स्वस्थ,, कीट एवं बीमारी रहित होने चाहिए। चार तरीके से इसका रोपक करते हैं, जैसे- मैटिड से, स्पेस्ड से, हिल तथा प्लास्टिक फिल्म।

उर्वरण व खाद : भिन्न-भिन्न खद एवं उर्वरण की दर अलग-अलग राज्यों के लिए निर्धारित की गई है जिसमें हिमाचल प्रदेश के लिए खाद व उर्वरण को इस प्रकार निर्धारित किया गया है - 50 टन सड़ी हुई गोबर की खाद, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 40 कि.ग्रा. पोटाश को भूमि तैयार करने समय डालते हैं। नत्रजन (80 कि.ग्रा.) को दो भागों में बांटका एक भाग को सितम्बर और दूसरे भाग को फुल आते समय देना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण - खरपतवार नियंत्रण के लिए 3-4 निराई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है। ड्यूरान रसायन 5 कि.ग्रा./है. का एक छिड़काव फसल की गुड़ाई के बाद करें।

तुड़ाई एवं उपज - स्ट्राबेरी की तुड़ाई फलों के आधे से तीन चौथाई भाग के रंग बदलने के पश्चात् करते हैकं। फलों का पकना गर्म मौसम में शीध्र होता है। फल की तुड़ाई डण्ठल सहित सुबह के समय करते हैं। इसकी उपज 90 क्विंटल/है. आंकी गई है। अच्छे उव्ररण प्रबंध द्वारा इसकी उपज 175-200 क्विंटल/है. तक होती है।

तुड़ाई उपरांत प्रौद्योगिकी

फलों की सतह का 2/3 हिस्सा लाल रंग का होने पर तुड़ाई करे।

छंटाई करके फलो को प्लास्टिक की पन्नेट (200 ग्राम) में पैक करें।

पन्नेट को सिंगल लेयर सीएफबी बॉक्य में रखें।

फलों को शीत गृह मे 4-5 डिग्री से. तापमान व 85-90 प्रतिशत आर्द्रता पर 20-25 दिन के लिए भण्डारित करें।

फलों से जैम, जेली, आईसक्रीम आदि उत्पाद तैयार करें।

कीट प्रकोप एवं प्रबंधन

1. लाल मकड़ी माइट

ये लाल रंग के माइट पत्तों की निचली सतह से रस चूसते हैं जिससे पत्तों पर धब्बे बन जाते हैं तथा उनकी वृद्धि रूक जाने से उपज कम हो जाती है।

2. थ्रिप्स

थ्रिप्स पौधे के पत्तों व फलों से रस चूसकर हानि पहुँचाते हैं। इनसे फसल के बचाव के लिए एन्डोसल्फान 35 ई.सी. 2 मि.लि./लिटर या कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम/लिटर या डाइमेथेएट 30 ई.सी. 1 मि.लि./लिटर का छिड़काव करें।

3. पत्ती सूत्रकृमि (लीफ नेमाटोड)

यह सूत्रकृमि पौधे के नए फलों को नुसान पहुँचाता है जिससे ये टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं तथा इन पर स्लेटी रंग के धब्बे बन जाते हें। पौधों की वृद्धि पर बुरा प्रभाव पड़ने से ऊपर काफी कम हो जाती है।

प्रबंधन

1. खेत की मिटटी का निर्जर्मीकरण करें।
2. रोपाई से पहले पौधे को 5 मिनट के लिए इसाजोफॉस 50 ई.सी. के 2 प्रतिशत घोल में डुबोएँ।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा